IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. शालिनी गुप्ता
(सहायक प्राध्यापक, कमला नेहरू महाविद्यालय)

सारांश – यह अध्ययन भोपाल जिले के शासकीय और अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए किया गया। इसमें न्यादर्श के लिए 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिसमें 50 छात्र और 50 छात्राएं थीं, जो म.प्र. के भोपाल जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा 10वीं में पढ़ते थे। इन विद्यालयों का चयन लॉटरी विधि द्वारा यादृच्छिक नमूना पद्धति का प्रयोग करके किया गया था। आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए मीन, एक्प और ज–टेस्ट का प्रयोग किया गया। परिणाम में पाया गया कि शासकीय और अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। परिणाम में यह भी पाया गया कि शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है। अशासकीय और शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है। अशासकीय और शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में काफी अंतर है।

विशिष्ट शब्दावली – शासकीय विद्यालय, अशासकीय विद्यालय, उच्च माध्यमिक विद्यालय, शैक्षिक उपलब्धि

प्रस्तावना – शिक्षा कोई साधारण अवधारणा नहीं है। शिक्षा की अवधारणा अलग–अलग परिपेक्ष्य में और दुनिया के अलग–अलग विद्यालयों में अलग–अलग होती है। इसी तरह विद्यालयों का माहौल भी अलग–अलग होता है। शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थी का संपूर्ण विकास है। हमारे समाज में किसी की योग्यता को जांचने के लिए शैक्षिक उपलब्धि को एक महत्वपूर्ण मापदंड माना जाता है। तकनीकी और सूचना पर आधारित समाज ऐसे लोगों की मांग करता है जो अलग–अलग मुद्दों पर अपने विचार प्रस्तुत कर सकें, उसका विश्लेषण कर सकें और नई परिस्थितियों के हिसाब से ढाल सकें। एक देश अपनी नागरिकों को जो सबसे अच्छी विरासत दे सकता है, वह है शिक्षा। इसी वजह से किसी देश का विकास पूरी तरह से उस देश की शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। कहा जाता है कि औपचारिक शिक्षा समाज में अच्छा सामाजिक, आर्थिक विकास और सामाजिक गतिशीलता पाने का तरीका है। प्रत्येक विद्यार्थी के लिए शैक्षिक उपलब्धि समाज में उसके सफल विकास में मदद करती है। विद्यालय एक छोटा समाज है जिसमें बच्चे रहते हैं, बातचीत करते हैं और अपने शिक्षकों की देखरेख में काम करते हैं। विद्यालय एक सामाजिक संस्था है जो परिवार से अलग है। बच्चे का विकास स्कूल के कई कारकों जैसे आकार, जनसंख्या, उम्र, स्कूल का

प्रकार और सबसे महत्वपूर्ण रूप से इसकी सामाजिक संस्कृति से प्रभावित होता है। इसलिए इस अध्ययन में अध्ययनकर्ता का उद्देश्य भोपाल जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्यनरत कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि जानना है।

किसी भी देश के भविष्य को आकार देने में शिक्षा एक महत्वपूर्ण कारक है। भारत में, शिक्षा प्रणाली में शासकीय और अशासकीय दोनों तरह के विद्यालय शामिल हैं। जहाँ शासकीय विद्यालय आमतौर पर ज़्यादा किफ़ायती होते हैं, वहीं अशासकीय विद्यालय अक्सर उच्च–गुणवत्ता वाली शिक्षा और बेहतर बुनियादी ढाँचा प्रदान करते हैं। हालाँकि, गुणवत्ता में यह अंतर अक्सर उच्च लागत के साथ आता है, और कई परिवार निजी शिक्षा का खर्च वहन करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। शासकीय और अशासकोय शिक्षा के बीच यह अंतर छात्रों के परिणामों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकता है और सामाजिक और आर्थिक असमानता को बढ़ा सकता है।

भारत में छात्रों के परिणामों पर शासकीय बनाम अशासकीय शिक्षा का प्रभाव एक जटिल मुद्दा है। एक ओर, अशासकीय स्कूल अक्सर शासकीय स्कूलों की तुलना में बेहतर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करते हैं, जिससे छात्रों के शैक्षणिक परिणाम बेहतर हो सकते हैं। अशासकीय स्कूलों में बेहतर बुनियादी ढाँचा, बेहतर प्रशिक्षित शिक्षक और अधिक कठोर शैक्षणिक पाठ्यक्रम हो सकता है। उनकी कक्षाएँ छोटी भी हो सकती हैं, जिससे छात्रों पर अधिक व्यक्तिगत ध्यान दिया जा सके। ये सभी कारक बेहतर छात्र परिणामों में योगदान दे सकते हैं।

दूसरी ओर, शासकीय स्कूलों में शिक्षक छात्रों पर व्यक्तिगत ध्यान नहीं दे पाते हैं, क्योंकि शिक्षकों को पढ़ाने के अतिरिक्त भी अन्य बहुत से गैर शैक्षणिक कार्यों में व्यस्त रखा जाता है, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता प्रभावित होती है और छात्रों का परीक्षा परिणाम भी प्रभावित होता है। शासकीय स्कूलों में शिक्षक परंपरागत तरीकों से पढ़ाते है, जिससे छात्र आधुनिक पढ़ाई के तरीकों से वंचित रहते है। इसी कारण वर्तमान में शासकीय स्कूलों में विद्यार्थियों की संख्या में बहुत गिरावट देखने को मिली।

समस्या कथन – "शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन"

अध्ययन के उद्देश्य

1. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।
2. शासकीय विद्यालयों के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।
3. अशासकीय विद्यालयों के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।
4. शासकीय और अशासकीय विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।
5. शासकीय और अशासकीय विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।

अध्ययन की परिकल्पना

परिकल्पना क्र. 1 – शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अंतर नहीं है।

परिकल्पना क्र. 2 – शासकीय विद्यालयों के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना क्र. 3 – अशासकीय विद्यालयों के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना क्र. 4 – शासकीय और अशासकीय विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना क्र. 5 – शासकीय और अशासकीय विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन की परिसीमाएँ

1. प्रस्तुत अध्ययन भोपाल जिले तक सीमित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन सिर्फ उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 100 विद्यार्थियों तक सीमित है।
3. यह अध्ययन कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों तक सीमित है।

अध्ययन में शामिल चरों की संक्रियात्मक परिभाषाएँ

शैक्षिक उपलब्धि – शैक्षिक उपलब्धि वह प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थी अपने शैक्षिक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयास करते हैं। यह प्रक्रिया विद्यार्थी के ज्ञान, कौशल और समझ को विकसित करने में मदद करती है और इस प्रक्रिया के माध्यम से विद्यार्थी अपने शैक्षिक लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

उच्च माध्यमिक विद्यालय – वे विद्यालय जिनमें कक्षा 9वीं से लेकर कक्षा 12वीं तक की पढ़ाई होती है, उन विद्यालयों को उच्च माध्यमिक विद्यालय कहा जाता है।

शासकीय विद्यालय – शासकीय विद्यालय वह विद्यालय ह जो पूरी तरह से सरकार क नियंत्रण और देखरेख में चलते है।. इनमें अक्सर राष्ट्रीय पाठ्यक्रम (छंजपवदंस ब्नततपबनसनउ) का पालन किया जाता है और शिक्षक बनने के लिए योग्यता (जैसे ठण्म्कण) अनिवार्य होती है, हालांकि कई बार बुनियादी सुविधाओं और स्टाफ की कमी देखी जाती है।

अशासकीय विद्यालय – अशासकीय विद्यालय ऐसे विद्यालय होत हैं, जिन्हें शासकीय विद्यालय की तरह सरकार द्वारा चलाया या फंड नहीं दिया जाता। यह अपने खर्च के लिए नेशनल या लोकल सरकार पर निर्भर नहीं होते हैं। आमतौर पर उनका एक बोर्ड ऑफ़ गवर्नर्स होता है और एक गवर्नेंस सिस्टम होता है जो उनके स्वतंत्र संचालन को सुनिश्चित करता है।

अध्ययन को ज़रूरत और महत्व

शिक्षा ही एकमात्र ऐसा साधन है जिससे कोई देश खुद को जैसा बनाना चाहता है, उसे वैसा बना सकता है। माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता और विस्तार को बनाए रखने के लिए सरकार ने समुदाय से सक्रिय भागीदारी लेने का फैसला किया है। इसलिए, सरकार माध्यमिक शिक्षा की ज़िम्मेदारी अलग–अलग स्थानीय निकायों और निजी मैनेजमेंट को सौंपती है। माध्यमिक स्तर पर विद्यालय सरकार, स्थानीय निकायों और निजी मैनेजमेंट द्वारा चलाए जाते हैं। निजी शिक्षण संस्थान मुख्य रूप से दो श्रेणियों में आते हैं; मान्यता प्राप्त सहायता प्राप्त संस्थान और मान्यता प्राप्त स्व–वित्तपोषित संस्थान। माध्यमिक विद्यालयों में ज़्यादातर छात्र दूसरी श्रेणी यानी मान्यता प्राप्त और स्व–वित्तपोषित संस्थानों में हैं। हमेशा यह माना जाता है कि शासकीय विद्यालय अच्छे विद्यालय होते हैं और अशासकीय विद्यालय उतने अच्छे नहीं होते। यह सच है कि कुछ अशासकीय विद्यालयों ने शिक्षा में नकारात्मक योगदान दिया है, लेकिन कुछ शासकीय विद्यालय भी इस आलोचना से ऊपर नहीं हैं, लेकिन साथ ही हमें यह भी मानना चाहिए कि अशासकीय विद्यालयों ने भारत में माध्यमिक शिक्षा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शासकीय बनाम

अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन करके हम यह जान सकते हैं कि शिक्षा के विकास में किस प्रकार के विद्यालय अपना महत्वपूर्ण यागदान देते हैं।

शोध अध्ययन की प्रविधि

प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक विधि द्वारा किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में भोपाल जिले के शासकीय और अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 10वीं के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को शामिल किया गया। यह अध्ययन 100 विद्यार्थियों के न्यादर्श पर किया गया, जिसमें उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों (50 छात्र और 50 लड़कियां) को यादृच्छिक चयन विधि की लॉटरी विधि का उपयोग करके चुना गया था। मध्य प्रदेश के भोपाल जिले के सभी उच्च माध्यमिक विद्यालयों की सूची दो वेबसाइटों, म्कनबंजपवदचवतजंसण्उचण्हवअण्पद और ज्तहमजेजनकलण्बवउ से प्राप्त की गई थी।

शोधकर्ता ने इस अध्ययन के लिए भोपाल जिले के विभिन्न उच्च माध्यमिक विद्यालयों से आंकडों का संकलन किया। शोधकर्ता ने इस उद्देश्य के लिए निम्नलिखित उपकरणों का उपयोग किया :–

1. शोधकर्ता द्वारा तैयार किया गया सूचना पत्र।
2. कक्षा 10वीं के छात्रों के स्कूल रिकॉर्ड कार्ड से प्राप्त शैक्षणिक उपलब्धि स्कोर।

आंकडों का सांख्यिकीय विश्लेषण :

शैक्षिक उपलब्धि पर एकत्र किए गए आंकड़ों की स्कोरिंग पूरी करने के बाद, निष्कर्ष निकालने के लिए डेटा को निम्नलिखित तकनीकों का उपयोग करके सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए आगे बढ़ाया गया। माध्य, मानक विचलन (ण्क) और ज–टेस्ट।.

आंकडों का विश्लेषण :

तालिका 1 : 'शासकीय और अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के बीच शैक्षिक उपलब्धि की तुलना

समूह	छ	माध्य ;डद्ध	मानक विचलन ;क्द्ध	ज मान	सार्थकता स्तर
शासकीय विद्यालय	50	346.5	31.88	2.32	सार्थक
अशासकीय विद्यालय	50	361.7	33.55		

क्ि त्र 98, ब्तपजपबंस अंसनम वf भज” ज 0ण्01 समअमस त्र2ण्63 ब्तपजपबंस अंसनम वf भज” ज 0ण्05 समअमस त्र1ण्98

1. तालिका क्रमांक 01 से स्पष्ट है कि शासकीय और अशासकीय विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के औसत मान क्रमशः 346.5 और 361.7 हैं, जिनका क मान क्रमशः 31.88 और 33.55 है। ऊपर दिए गए दोनों समूहों का ज मान 2.32 है, जो 0.05 के सार्थकता स्तर पर महत्वपूर्ण है। इसलिए, शासकीय और अशासकीय विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में एक महत्वपूर्ण अंतर है। इस प्रकार, परिकल्पना, "शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अंतर नहीं है।" अस्वीकृत होती है।

सामान्यीकरण – तालिका में दिए गए दोनों समूहों के मध्यमानों का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि अशासकीय विद्यालयों के छात्रों का औसत मान (361.7) शासकीय विद्यालय के छात्रों (346.5) की तुलना में अधिक है। इसलिए, शासकीय विद्यालय के छात्रों की तुलना में अशासकीय विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पाई गई।

तालिका क्रमांक 2 रू शासकीय विद्यालयों के छात्रों एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना

समूह	छ	माध्य ;डद्ध	मानक विचलन ;क्द्ध	ज मान	सार्थकता स्तर
शासकीय विद्यालयों के छात्र	25	355.8	39.20	2.16	सार्थक
शासकीय विद्यालयों की छात्राएं	25	337.2	17.96		

Df = 98] Critical value of "t" at 0.01 level =2.68, Critical value of "t" at 0.05 level =2.01

सामान्यीकरण – तालिका क्रमांक 2 से यह स्पष्ट है कि शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्र और छात्राओं को शैक्षिक उपलब्धि के औसत स्कोर क्रमशः 355.8 और 337.2 हैं, जिनका एक्ण क्रमशः 39.20 और 17.96 है। ऊपर दिए गए दोनों समूहों का ज मान 2.16 है, जो 0.05 के सार्थकता स्तर पर महत्वपूर्ण है। इसलिए, शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में एक महत्वपूर्ण अंतर है। इस प्रकार, पहले बनाई गयी परिकल्पना "शासकीय स्कूलों के छात्र और छात्राओं के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।" अस्वीकृत कर दिया जाता है।

तालिका क्रमांक 2 में यह पाया गया कि शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का औसत स्कोर 355.8, शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के औसत स्कोर 337.2 से ज़्यादा है। इसलिए, शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि, शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की तुलना में ज़्यादा पायी गयी।

तालिका क्रमांक 3 रू अशासकीय विद्यालयों के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना

समूह	छ	माध्य ;डद्ध	मानक विचलन ;क्द्ध	ज मान	सार्थकता स्तर
अशासकीय विद्यालयों के छात्र	25	363.96	33.74	0.47	सार्थक नही
अशासकीय विद्यालयों की छात्राएं	25	359.44	34.11		

Df=48 Critical value of "t" at 0.01 level =2.68 Critical value of "t" at 0.05 level =2.01

सामान्यीकरण – तालिका क्रमांक 3 से यह स्पष्ट होता है कि अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्र और छात्राओं की'शैक्षिक उपलब्धि के औसत स्कोर क्रमशः 363.96 और 359.44 हैं, जिनका एक्ण क्रमशः 33.74 और 34.11 है। ऊपर दिए गए दोनों समूहों का 'ज' मान 0.47 है, जो 0.05 और 0.01 सार्थकता स्तर पर महत्वपूर्ण नहीं है। इसलिए अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

इस प्रकार, पहले बनायी गयो परिकल्पना, "अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं ह", को स्वीकार किया जाता है। इसलिए यह निष्कर्ष निकाला गया कि अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एक ही प्लेटफॉर्म पर हैं। इसलिए, कोई निर्णायक फैसला नहीं लिया जा सकता।

तालिका क्रमांक 4 : अशासकीय और शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना

समूह	छ	माध्य ;डद्ध	मानक विचलन ;क्द्ध	ज मान	सार्थकता स्तर
अशासकीय विद्यालयों के छात्र	25	363.96	33.74	0.79	सार्थक नही
शासकीय विद्यालयों के छात्र	25	355.8	39.20		

Df=48 Critical value of "t" at 0.01 level =2.68 Critical value of "t" at 0.05 level =2.01

तालिका क्रमांक 4 से यह स्पष्ट है कि शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि के औसत मान क्रमशः 363.96 और 355.8 हैं, जिनका ण्क्. क्रमशः 33.74 और 39.20 है। ऊपर दिए गए दोनों समूहों का 'ज' मान 0.79 है, जो 0.05 और 0.01 के सार्थकता स्तर पर पर महत्वपूर्ण नहीं है। इसलिए शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है। इस प्रकार, पहले बनायी गयी परिकल्पना, "शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है, को स्वीकार किया जाता है। इसलिए, यह निष्कर्ष निकाला गया कि शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि एक ही प्लेटफॉर्म पर हैं। इसलिए, कोई निर्णायक फैसला नहीं लिया जा सकता।

तालिका क्रमांक 5 :शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि की तुलना

समूह	छ	माध्य ;डद्ध	मानक विचलन ;क्द्ध	ज्मान	सार्थकता स्तर
अशासकीय विद्यालयों के छात्राएं	25	359.44	34.11	2.88	सार्थक
शासकीय विद्यालयों के छात्राएं	25	337.2	17.96		

Df=48 Critical value of "t" at 0.01 level =2.68 Critical value of "t" at 0.05 level =2.01

सामान्यीकरण – तालिका क्रमांक 5 से यह स्पष्ट है कि अशासकीय एवं शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के औसत मान क्रमशः 359.44 और 337.2 हैं, जिनका ण्क्ण् क्रमशः 34.11 और 17.96 है। ऊपर दिए गए दोनों समूहों का 'ज' मान 2.88 है, जो 0.05 और 0.01 दोनों सार्थकता स्तर पर महत्वपूर्ण है। इसलिए, शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण अंतर है। इस प्रकार, परिकल्पना, "शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।" अस्वीकृत होती है।

तालिका क्रमांक 5 से यह पाया गया कि अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं का औसत मान (359.44) है जो शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं के औसत मान (337.2) से अधिक है। इसलिए, अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की तुलना में अधिक पायी गयी।

परिणाम एवं निष्कर्ष :

1. परिणाम दर्शाते हैं कि शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। इसलिए, यह निष्कर्ष निकाला गया कि अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में बेहतर है।
2. परिणाम दर्शाते हैं कि शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। इसलिए, यह निष्कर्ष निकाला गया कि शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि छात्राओं की तुलना में बेहतर है।
3. परिणाम दर्शाते हैं कि अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नही है। इसलिए, यह निष्कर्ष निकाला गया कि अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि लगभग समान स्तर पर हैं।
4. परिणाम दशाते हैं कि शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है। इसलिए, यह निष्कर्ष निकाला गया कि शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एक ही स्तर पर हैं। इसलिए, कोई निर्णायक फैसला नहीं लिया जा जा सकता।
5. परिणाम दर्शाते नतीजे बताते हैं कि शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। इसलिए, यह निष्कर्ष निकाला गया कि अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की तुलना में अधिक पायी गयी।

आगे के रिसर्च के लिए सुझाव

शोधकर्ता द्वारा आगे के रिसर्च के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए गए है :

- यह शोध उच्च माध्यमिक विद्यालयों कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले 100 विद्यार्थियों पर किया गया था। बेहतर और ज़्यादा प्रामाणिक नतीजे पाने के लिए इसी तरह का अध्ययन बड़े सैंपल पर किया जा सकता है।
- इसी तरह का अध्ययन अलग–अलग उम्र के समूहों और अलग–अलग शैक्षिक स्तर के छात्रों पर किया जा सकता है।
- कुछ क्षेत्रीय विभिन्नताओं का अध्ययन करने के लिए अलग–अलग राज्यों में इसी तरह का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- इसी तरह का अध्ययन स्ट्रीम–वाइज़ और अलग–अलग सामाजिक–आर्थिक स्थिति के आधार पर किया जा सकता है।
- नवोदय विद्यालय, केंद्रीय विद्यालय जैसे अलग–अलग स्कूलों को समान चरों के साथ तुलनात्मक अध्ययन के लिए लिया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

- Abalaka, A.H. and Theresa, E.T. (2015). Extroversion-Introversion and Subject Preference as Factors of Academic Performance among Secondary School Students in FCT, Abuja.
- International Journal of Novel Research in Education and Learning, 2(4), 13-21. Abubakar, R.B. and Adegboyega, B.I. (2012). Age and gender as determinants of academic achievements in college mathematics. Asian Journal of Natural and Applied Sciences, 1(2), 121-127.
- Ahmad, I. and Rana, S. (2012). Affectivity, Achievement Motivation, and Academic Performance in College Students. Pakistan Journal of Psychological Research, 27(1), 107-120.
- Dawson, J.R. and Shih, C.P. (2015). Comparative Analysis on Personality Traits and Motivation on International Students' Academic Performance in Universities in Taiwan. International Journal of Humanities and Management Sciences, 3(4), 209-216.

- Dhall, S. (2014). A study of academic achievement among adolescents in relation to achievement motivation and home environment. Journal of All India Association for Educational Research, 26(1), 1-6. ternational Journal of Humanities and Management Sciences, 3(4), 209-216.
- Maheswari, K. and Aruna, M. (2016). Gender difference and achievement motivation among adolescent school students. International Journal of Applied Research, 2(1), 149-152.
- Sherafat, R. and Venkateshamurthy, C.G. (2016). A Study of Study Habits and Academic Achievement among Secondary and Senior Secondary School Students of Mysore City. The International Journal of Indian Psychology, 3(2),162-170.